में जनता पिस रही है। आर्थिक विषमता बढ़ गई है। गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और विषमता आज की समस्या है। इनका समाधान हुये बिना किसी भी भारतीय को सुख और शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। क्या अहिंसा परमोधर्म के सिद्धान्त से यह समस्या हल की जा सकती है? इस सिद्धांत की क्या नई व्याख्या करें कि इन समस्याओं का समाधान हो और दूसरी ओर इस सिद्धांत को सीमित करने की बजाय इसे और व्यापक बनाया जा सके।

या स्वतन्त्रता की समस्या हल करने के लिये गांधी जी ने जैसे अहिंसा के साथ सत्याग्रह का सिद्धांत जोड़ा था वैसे ही गरीबी बेरोजगारी आदि उपरोक्त समस्याओं का हल करने के लिये कोई और सिद्धांत जोड़ा जाय जैसे गांधी जी ने ट्रस्टीशिप का विचार दिया था और उसके बाद विनोबा जी ने भूदान और सम्पत्ति दान का मार्ग दिखाया है और अब ग्राम दान और नगर दान तक पहुंच गये हैं। मगर बिनोबा जी तो कहते है कि सभी भूमि सम्पत्ति गोपाल की है।

सभी सम्पत्ति गोपाल की है तो फिर साधारण लोगों को भाग्य की भूल भुलैया से कैसे निकालें? क्योंकि उन्हें तो यह दरसाया गया है कि जिसने पिछले जन्म में अच्छे कर्म किये, वह धनी के घर पैदा हुआ। जिसने बुरे कर्म किये, वह गरीब के घर और इस प्रकार कर्मवाद के साथ सम्पत्ति को जोड़ दिया। वास्तव में व्यक्तिगत सम्पत्ति ने कर्मवाद का ही नहीं, समाज का हुलिया बिगाड़ दिया है। अहिंसा के आधार पर गरीबी, बेरोजगारी और विषमता आदि की भयानक समस्याओं का हल करना है तो फिर गांधी जी और विनोबा जी की बात पर ध्यान देना होगा। कर्मवाद की सच्ची व्याख्या करनी होगी और इसके प्रभाव से सम्पत्ति को निकालना होगा। सम्पत्ति भाग्य के चक्कर से निकली तो सम्पत्ति व्यक्ति का मूल अधिकार तो रहेगा ही नहीं सारी सम्पत्ति का मालिक समाज हो जायेगी। समाज सारी सम्पत्ति की मालिक समझी जावे—तब समाज की व्यवस्था और गठन भी नये, ढंग से करनी होगी। मैं समझता हूं कि महावीर स्वामी के 25 सौ वें निर्वाण दिवस के शुभ अवसर को हम भली प्रकार मनावेंगे अगर हमारा ध्यान इन बुनियादी सवालों की तरफ जावे। इन पर विचार गोष्ठी की जावे, लेख लिखे जावें, रिसर्च के द्वारा खोज की जावे और हम इन मौलिक प्रश्नों का केवल समाधान ही न करें किन्तु आचरण में भी लें। यदि हम ऐसा कर सकें तो भारत दुनिया के लिए नया मार्ग दर्शन करेगा और जिस आर्थिक और सामाजिक क्रांति की जरूरत है वह खून खराबी के बजाय शान्ति (अहिंसक) ढग से आ सकेगी, और महावीर स्वामी की देन "अहिंसा परमोधर्म" का डंका दुनिया में बज जायेगा।

downloaded from moolchandjain.org

बाबू जी द्वारा आपातकाल के दौरान 16 मई 1977 को जेल से स्वामी इन्द्रवेश को लिखे गए पत्र के अंश

आदरणीय स्वामी जी,

जय हिन्द! आपका संदेश पढ़ा। आप का मुझ से जो विशेष स्नेह हो गया है, इसके लिये आप का अभारी हूं। मेरे बाहर आने के लिये आप ने दिलचस्पी दिखा रहे हैं, यह उसी स्नेह का प्रतीक है।

बाहर की हालत का जो चित्र आपने खींचा है, उससे मतभेदन नहीं, परन्तु जो इलाज आप ने बताया है, उससे है। यह समय हमारी आजमाइश का था। केवल अपनी हिम्मत की आजमाइश का नहीं अपितु ईश्वर में अपनी आस्था की आजमाइश की थी। आन्दोलन का उद्देश्य केवल ही सरकार को गतिशील बनाना और सरकार को बदलना हो। मगर अमरजैन्सी लागू करने पर नागरिक स्वतन्त्रता के सारे अधिकार छीन कर पूर्ण तानाशाही स्थापित कर दी जावे और जिसमें, प्रधानमन्त्री तक, सभी हाकिमों को सफेद झूठ बोलने और सत्य को दबाने में कोई लज्जा ने आवे, रूल आफ ला समाप्त कर दिया जायें और कांग्रेस विरोधियों को अपनी मातृ-भूमि में ही घटिया दर्जे का नागरिक समझा जाये, तो यह पहले से भी ज्यादा अत्याचार की बातें कैसे सहन की जा सकती है? इनसे सम्पूर्ण भारत बड़ जेलखाना बन गया है। बड़ी जेल में रहे और भ्रम स्वतन्त्र नागरिक का करते रहें या चूहों की तरह बिलों में दुबके रहें या राजनीतिक काम न करने का आशवासन दें क्या इससे अच्छा छोटी जेल में रहना ठीक नहीं है? कृपया सोचिये कि मेरी तरह सारे नजरबन्द ऐसा करने लगें और स्यासी काम न करने का भरोसा (assurance) देकर पैरोल पर चले जावें तो उससे देश के स्वाभिमान का क्या बनेगा? लोकतन्त्र कहा जायेगा?

नंगी तानाशाही आज बेशक सफल दिखाई दे, और जेल में पड़े नजरबन्द चाहे गिनती में थोड़े हों, इस तानाशाही के विरुद्ध खुले चैलेन्ज का प्रतीक हैं। मेरी आत्मा को शान्ति देने के लिये यही काफी है। मुझे दुख है कि आप और मैं जेल में जो बातें करते थे कि आप आर्य समाज के तंग दायरे से कैसे छुटकारा पावें। हालात ने फिर न केवल आपको वहीं धकेल दिया है अपितु यह हरियाणा सरकार आप के संगठन के माध्यम से विरोधी लोकतांत्रिक पक्ष को कमजोर करना चाहती है। कृपया आप दूर की सोचें। निकट लाभ की तो हर कोई सोचता है।

गीता का अनाशक्ति योग सिद्धान्त में आपको सामने रखता हुआ क्या अच्छा लगूंगा?

यह हैं मेरे विचार। मेरा सुभाग्य है कि मेरी पत्नी इन विचारों से सहमत है। पं० श्रीराम जी की तरह हरियाणा सरकार मुझे या किसी नजरबन्द को रिहा करे तो मैं बाहर जाकर रीएक्शनरी फोर्सज को मजबूत नहीं करूंगा, न पहले किया, आप जानते ही हैं।

शताब्दी समारोह के लिये बधाई। आशा है आप इस समारोह के जोश में जेल में इतनी मेहनत से सीखी अंग्रेजी भाषा न भूलें होंगे और इस का अभ्यास चालू होगा।

स्वामी अग्निवेश जी को नमस्ते कहना और यह पत्र भी बेशक पढ़ा देना।

आदर सहित।

आपका

मूलचन्द जैन